Subject - Maithili (IInd semester)
Paper code - CC6, MTL-522
Topic - Varnaratnakara: ek vivechan

Format - PDF

Name/contact - Dr. Sudhir Kumar Jha
Department of Maithili
Patna University
Mo. 9661819662
email drsudhirkrjha1170@gmail.com

Scanned with CamScanner

वर्णरत्नाकर : एक विवेचन

कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर विरचित 'वर्णरत्नाकर' मैथिलीक सभ सँ प्राचीन ओ प्रौढ़ सामग्री थिक। यद्यपि एहि सँ पूर्वो मैथिली साहित्येतिहास मे संस्कृत निबन्ध मध्य प्रयुक्त मैथिली शब्द सभ, सिद्ध साहित्य, डाक एवं घाघ द्वारा रचित कृषि, यात्रा, शकुन, व्यवहार प्रभृति सम्बन्धी सूक्तिक विवरण भेटैत अछि। मुदा वर्णरत्नाकरक महत्व एहि हेतुएँ बढ़ि जाइत अछि जे मैथिली पहिले-पहिल एही मे अपना केँ व्यापक रूपेँ पओलक, संगहिँ एतहि सँ मैथिली गद्यक श्रीगणेश भेल।

'वर्णरत्नाकर' आठ कल्लोल वा लहरि मे विभक्त अछि। कल्लोल सभक नाम क्रमशः नगर, नायिका, आस्थान, ऋतु, प्रयाणक, भट्टादि, श्मशान ओ राजपुत्र कुल वर्णन आदि दैक। प्रत्येक कल्लोलक वर्णन सभ 'अथ... वर्णना' सँ प्रारम्भ होइत अछि। कल्लोलक अन्त मे ओहि कल्लोलक नाम, पुस्तकक नाम एवं लेखक वा हुनक उपाधि प्रस्तुत कएल गेल अछि। सभ शीर्षक मे ओकर नामानुसार वर्णन देल गेल दैक। ज्योतिरीश्वर एहि ग्रन्थ मे संस्कृत साहित्यिक विविध वस्तु यथा– अठारहो पुराणक नाम, उनचास पवनक नाम, बारहो आदित्य, युद्धक छत्तीस अस्त्र, नृत्य ओ गीतादिक वर्णन कएने छथि। संगहिँ बहुत विषय एहनो अछि जकर वर्णन हमरा लोकनि केँ मात्र एहीठा मे भेटैत अछि। यथा, जूआ खेलएबाक प्रक्रियाक वर्णन, सतरंजक चालि, वृक्ष एवं पुष्प सभक विभिन्न प्रकार आदि। एहि सभक संग्रह सँ स्पष्ट होइत अछि जे एहि कृति मे लेखक मात्र वस्तुक नाम नहि गनओने छथि अपितु अपन अनुसन्धानवृत्तिक परिचय सेहो देने छथि।

'वर्णरत्नाकर' क प्रथम कल्लोल मे निम्न जातिक लोक, किछु डोमी, नीच आदि जाति तथा भिखारी सभक जाति एवं शोभीक वर्णन कएल गेल अछि। द्वितीय कल्लोल मे नायक वर्णन अछि। नायक अस्त्रशस्त्र मे निपुण, उपसिद्धि, प्राकृतसिद्धि ओ महासिद्धिक ज्ञाता, राजनीतिक विशेषज्ञ आदि मानवीय गुण सभ सँ युक्त छथि। एकर पश्चात नायिका वर्णन अछि। नायिकाक मानसिक ओ आध्यात्मिक सभ प्रकारक चित्रण भेल अछि।

तृतीय कल्लोल मे राजदरबारक वर्णन एवं चित्र उपस्थित कएल गेल अछि। चतुर्थ कल्लोल मे ऋतुक वर्णन अछि। एहि कल्लोल मे लेखक प्रकृति सँ कलाक क्षेत्र मे चलि जाइत छथि आ

Scanned with CamScanner

चौंसठो कला, षोडश महादान आदिक वर्णन करने छथि। पंचम कल्लोल प्रयाणक वर्णन सँ प्रारम्भ होइत अछि। एहि मे आखेट वर्णन, वन वर्णन, उपवन वर्णन, पर्वत वर्णन, स्थापत्य वर्णन आदि उपस्थित कएल गेल अछि। छठम कल्लोल मे कविता, संगीत एवं नृत्य कलाक वर्णन भेल अछि। एकर उपरान्त सातम कल्लोल मे श्मशानक वर्णन कएल गेल अछि जाहि मे समुद्र वर्णना, तीर्थ वर्णना, नदी वर्णना, ऋषि वर्णना आदिक समायोजन भेल अछि।

आठम ओ अन्तिम कल्लोल मे राजपुत्र कुलक वर्णन भेल अछि। एकर अन्तर्गत देश वर्णना, वैद्य वर्णना, वहित्र वर्णना आदिक निवेश अछि। सभक अन्त मे पुनर्भोजन वर्णना अछि जाहि मे संध्याकालीन भोजनक वर्णन कएल गेल अछि।

उपर्युक्त आठो कल्लोलक विषयक सम्बन्ध मे डॉ. सुनीति कुमार चटर्जीक वक्तव्य बड़ सटीक भेल अछि :

From the above account of the various subjects described or listed in this work.... the very great value of the Varna Ratnakara as a compendium of life and culture in mediaeval India will be easily seen!

'वर्णरत्नाकर' विषयवस्तु विशेष प्रकारक अछि। ई काव्यग्रंथ नहि अपितु काव्योपयोगी ग्रन्थ थिक। काव्य मे कोन वस्तुक वर्णन कोना करी, कवि कें तकर मार्गदर्शन कराएब एकर उद्देश्य हैब। उदाहरणार्थ, ऋतु वर्णना देखल जाए सकैत अछि। प्रत्येक ऋतुक वर्णन करैत ओकर गुण-अवगुण, ओहि सँ लाभ-हानि, ओहि सँ जनजीवन पर व्याप्त प्रभाव एवं ओहि सँ उपलब्ध प्रकृतित: परिवर्तन आदि सभक चित्रण ज्योतिरीश्वर करने छथि। वस्तुत: एहि ग्रन्थ सँ कवि लोकनि कें कोनो विषय पर रचना करबा मे साहाय्य भेटि सकैत छनि एहि ग्रन्थक प्रथम अवलोकक म०म० हरप्रसाद शास्त्री सेहो कहने छथि-

The subject-matter of the book is very curious. It gives the poetic conventions. For instance, if a king is to be described, what are to be qualities, if a capital is to be described, what are to be the details, and so on. Something the conventions are very amusing.[2]

मैथिली साहित्य मे सामाजिक, ऐतिहासिक, साहित्यि ओ भाषा-विज्ञानक सन्दर्भ मे 'वर्णरत्नाकर'क महत्व सर्वतम अछि। ज्योतिरीश्वर काव्योपयोगी विषयक वर्णनहिक क्रम मे तत्कालीन सामाजिक जीवनक समग्र चित्र एहि मे उतारि देने छथि। एहि प्रसंग आचार्य

Scanned with CamScanner

हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखने छथि :

प्राचीन मैथिली भाषा के अध्ययन की दृष्टि से तो यह पुस्तक उत्तम है ही, परन्तु उस समय की सामाजिक रीति-नीति, काव्यरूढ़ि और काव्यरूपों के अध्ययन की दृष्टि से भी यह बहुत उपयोगी है। इस काल या इसके थोड़ा इधर-उधर के काल की लिखी हुई मुस्लिमपूर्व हिन्दू दरबार और भारतीय जीवन का परिचय देनेवाली पुस्तक नहीं मिलती। एक ओर यह 'मानसोल्लास' नामक पूर्ववर्ती संस्कृत ग्रन्थ की श्रेणी में पड़ती है और दूसरी ओर परवर्ती फारसी ग्रन्थ 'आइने अकबरी' की कोटि में आती है।[3]

ज्योतिरीश्वर कालीन मिथिला मे वर्ण व्यवस्थाक पूर्ण प्रधानता छल। सम्पूर्ण समाज अनेक जाति मे विभक्त छल। समाज मे शूद्र ओ स्त्री जातिक जीवन गर्हित मानल जाइत छलैक। तत्कालीन समाज मे भाषाविद्, लिपिवाचक, श्रुतिधर, महाकवि, शास्त्रज्ञ आदि विद्वानक अनेक कोटि छल। एहि ग्रन्थ सँ तत्कालीन धार्मिक भावनाक आभास सेहो भेटि जाइत अछि। सम्पूर्ण समाज वर्णाश्रमधर्म पर आस्था रखैत छल, वेद एवं ब्राह्मण पर निष्ठा छलैक ओ पुरोहितक स्थान मन्त्रीक बाद अबैत छल।

ऐतिहासिक दृष्टि सँ सेहो एहि पोथीक महत्व कनेको न्यून नहि अछि। एहि मे चौदहम शताब्दीक सामाजिक, धार्मिक ओ राजनीति आदि व्यवस्थाक विशद विश्लेषण भेल अछि। ओहि समय मे कोन प्रकारक व्यवहार प्रचलित छल, राजा सभ केहन होइत छलाह, केहन ग्रन्थक प्राधान्य छलैक आदि विषय सबहिक ज्ञान एहि सँ होइत अछि। ज्योतिरीश्वर सँ पूर्व संस्कृत मे अनेक लक्षण-ग्रन्थ : नाट्यशास्त्र, काव्यादर्श, काव्यमीमांसा, ध्वन्यालोक, काव्यप्रकाश आदिक रचना भए चुकल छल। किन्तु एहि ग्रन्थ सबहिक विषय छलैक काव्यक विवेचना-पद्धति स्थिर करब, रस-अलंकार आदिक विशद वर्णन उपस्थित करब। ज्योतिरीश्वर देखलन्हि जे संस्कृत एवं प्राकृतक स्थान लोकभाषा ग्रहण कए रहल अछि। अतएव ओहो लोकभाषाक शरण लए अपन विचार कें विशेष व्यापक बनाओल, संगहि भाषा ओ विषय दुइ क्षेत्र मे एक नवीन परम्पराक जन्म देलन्हि।

'वर्णरत्नाकर' उपमा, अनुप्रास ओ यमकादि अलंकार सँ अलंकृत ओ कल्पना सँ चमत्कृत अछि। अलंकारक सहज प्रवाह ज्योतिरीश्वरक आशुकवित्वक परिचायक थिक। एकर चमत्कारपूर्ण वर्णनक आधार पर किछु आलोचक वर्णरत्नाकर कें गद्यग्रन्थ नहि कहि पद्यग्रन्थ कहैत छथि। बहुतो कें एकर शैली मे 'कादम्बरी'क भान होइत छन्हि। एतबा अवश्य जे एहि पोथी कें पढ़लोपरान्त पाठकवर्ग अनायासे कल्पनालोक मे विचरण करए लगैत छथि। निम्न पाँती मे उपमाक छटा देखल जाए सकैत अछि :

अन्धकारक वर्णन,[4]

कालिन्दीक कल्लोल अइसन मांसल
काजरक पर्वत अइसन निविल
कुमन्त्र अइसन निफल
पापक सहोदर अइसन शरीर
शङ्गार समुद्रक कल्लोल अइसन

चन्द्रमाक वर्णन,[5]

लोक लोचनक रसायन अइसन
निशाक नायिकाक शङ्ख-वलय अइसन आकाश

'नायिका वर्णना' क निम्न अंश मे लेखकक कल्पनाक अद्भुत चमत्कार दृष्टिगत अछि :

जनि कामदेव संसार जिनि आएल तकरि पताका जनि एकर रूप देख कैं इन्द्र सहस्त्राक्ष भेलाह. ब्रह्माजे चतुर्मुख कएलहु. जनि एहि आलिङ्गए लागि एक कृष्ण चतुर्भुज भए गेलाह.[6]

ज्योतिरीश्वर स्त्रीगणक नीक ओ अधलाह दुहू पक्षक वर्णन 'वर्णरत्नाकर' मे कएने छथि। नायिका, सखी, वेश्या आदिक उपमा सँ अलंकृत सुन्दर चित्रण भेल अछि। नायिकाक वर्णन करैत ओ लिखैत छथि :

पूर्णिमाक चाँद अमृत पूरल अइसन मुँह,
पारिजातक पल्लव अइसन हाथ
श्वेत पंकज कॉ दल भ्रमर बइसल अइसन आँखि
कामदेवक नगर अइसन शरीर[7]

एक दिश जँ एहि प्रकारक सुन्दर रूप उपस्थित करैत छथि तँ पुन: दोसर स्थान पर ओ नारीक प्रति न्यून भाव प्रदर्शित करैत छथि। श्मशानक वर्णन करैत काल ओकरा ज्योतिरीश्वर 'स्त्रीक चरित्र अइसन दारुण'[8] एवं अन्धकारक वर्णन करैत ओकरा 'स्त्रीक चरित्र अइसन दुर्लक्ष्य'[9] कहैत छथि। अनेक स्थल पर ओ अपन हास्यप्रियताक परिचय देलन्हि अछि। एहि दृष्टि सँ हिनक 'कुटटनी वर्णना' बड़ दिव्य भेल अछि :

वर्ष सए तीनि भितर वएस. पाण्डुर मस्तुह, शङ्खावदात केश ..... मार्कण्डेक सहोदर जेठबहिनि अइसनि - लोभक बेटी अइसनि बुद्धिक मातुसि अइसनि कुटिलमति .... मृत्युसँ कलकल करइतें अछ मृत्यु बोल मञो तोहि लए जाओ. से बोल बरष एक काट देह मत्रि नगरक सोष सोहर देषि जाओ .... आदि।[10]

भाषावैज्ञानिक लोकनिक हेतु वर्णरत्नाकरक भाषा विशेष महत्व रखैत अछि। भारतीय आर्यभाषाक विकासक अध्ययन करबा मे एहि

Scanned with CamScanner

चित्रात्मक वर्णन उपस्थित कए अत्यन्त रूपेँ विविध सामाजिक एवं ऐतिहासिक विषयक उद्घाटन करलन्हि अछि।

वस्तुतः 'वर्णरत्नाकर' अद्यावधि सुधा-धवल ताप-प्रासाद ताजमहल सदृश नयनाभिराम अछि : अनुपम चमत्कार एवं निष्कलुष सौन्दर्यक प्रतीक अछि।

सन्दर्भ-संकेत

1. अनुशीलन अवबोध : डॉ. वासुकीनाथ झा, पृ-34
2. तत्रैव, पृ- 32
3. तत्रैव, पृ- 34
4. वर्णरत्नाकर : (सम्प.) प्रो. आनन्द मिश्र, पं. गोविन्द झा, पृ-34
5. तत्रैव, पृ- 35
6. तत्रैव, पृ- 45
7. तत्रैव, पृ- 23
8. तत्रैव, पृ- 72
9. तत्रैव, पृ- 34
10. तत्रैव, पृ- 45
11. अनुशीलन अवबोध : डॉ. वासुकीनाथ झा, पृ-38

Scanned with CamScanner